वह इस स्पष्ट सत्य को नहीं देख पाता। कृष्णभावनाभावित पुरुष को आस्तिक और नास्तिक, दोनों के ही हृदय में श्रीकृष्ण का दर्शन होता है। स्मृतिप्रमाण हैः **आततत्वाच्च मातृत्वादात्मा हि परमो हरिः।**

सम्पूर्ण प्राणियों के रचयिता होने से भगवान् श्रीकृष्ण सभी का माता के समान पोषण करते हैं। जिस प्रकार माता अपने सब पुत्रों में समता रखती है, परम पिता श्रीकृष्ण का भी सबमें समभाव है। यह इसी से सिद्ध हो जाता है कि प्राणीमात्र में परमात्मा का निवास है। बाह्यरूप से भी, प्रत्येक प्राणी भगवत्-शक्ति में स्थित है। जैसा सातवें अध्याय में वर्णन है, श्रीभगवान् की दो प्रधान शक्तियाँ हैंः परा और अपरा। परा-शक्ति का अंश होते हुए भी जीवात्मा अपरा-शक्ति में बँधा है। इस प्रकार वह सदा भगवत्-शक्ति में स्थित है; एक न एक प्रकार से जीव श्रीकृष्ण में ही स्थित है। योगी को समदृष्टि कहा है, क्योंकि वह देखता है कि अपने-अपने कर्मफल के अनुसार भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में होते हुए भी सभी जीव वास्तव में भगवान् श्रीकृष्ण के नित्यदास हैं। अपरा-शक्ति में जीव जड़ इन्द्रियों की सेवा करता है; पराशक्ति में स्थित होने पर वही साक्षात् श्रीभगवान् की सेवा में तत्पर हो जाता है। इस प्रकार दोनों अवस्थाओं में जीव श्रीकृष्ण का दास है। कृष्णभावनाभावित भक्त में यह समदृष्टि पूर्ण रूप से पाई जाती है।

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।।३०।।

यः=जो; **माम्**=मुझे; **पश्यति**=देखता है; **सर्वत्र**=सब में; **सर्वम्**=सब कुछ; **च**=तथा; **मयि**=मुझ में; **पश्यति**=देखता है; **तस्य**=उसके लिए; **अहम्**=मैं; **न**=नहीं; **प्रणश्यामि**=अप्राप्त होता; **सः**=वह; **च**=भी; **मे**=मेरे लिए; **न**=नहीं; **प्रणश्यति**=लुप्त होता।

अनुवाद

जो मुझे सबमें देखता है और सब कुछ मुझ में स्थित देखता है, उसके लिए म कभी अदृश्य नहीं होता, अर्थात् सदा प्राप्त रहता हूँ और वह भी मेरे लिए कभी अदृश्य नहीं होता।।३०।।

तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित भक्त निःसन्देह सर्वत्र श्रीकृष्ण का दर्शन करता है और सब कुछ श्रीकृष्ण में ही स्थित देखता है। वह भले ही माया की भिन्न-भिन्न अभिव्यक्तियों को देखता हुआ प्रतीत हो, परन्तु सभी कुछ श्रीकृष्ण की शक्ति की अभिव्यक्ति है, इस चेतना के कारण वह नित्य-निरन्तर कृष्णभावना से ही भावित रहता है। श्रीकृष्ण सर्वेश्वर हैं; इसलिए उनके बिना किसी वस्तु का अस्तित्त्व नहीं हो सकता। यह कृष्णभावनामृत का प्रधान सिद्धान्त है। कृष्णभावनामृत का तात्पर्य कृष्णप्रेम का विकास करना है। यह भवमुक्ति से परे की अवस्था है। यह आत्मानुभूति से